कक्षा-IV

पाठ 1 राग

पाठ 2 वनस्पति सेवा

पाठ 3 लोक नृत्य

पाठ 4 गोशाला की साफ सफाई

पाठ 5 प्रदूषण और शुद्धिकरण

1

राग

भारतीय संगीत व्यवस्था प्रकृति के साथ बहुत ही नजदीकी रूप से जुड़ी है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के स्तरीय नोट विशिष्ट परिस्थितियों और दशाओं में पशु-पक्षियों द्वारा निकाली गई आवाजों से बने हैं। इस पाठ में हम रागों के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आप :

- स्वरों और रागों में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- जनक राग और जन्य राग को पहचान सकेंगे; और
- दो रागों-मयमावला गावला ओर धीर शंकर भरण का प्रदर्शन कर पाएंगे।

चित्र 1.1 देवी सरस्वती

1.1 स्वर और राग

हमने भारतीय संगीत के केन्द्र के बारे में पढ़ा। राग क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित स्वरों की एक व्यवस्था है। यह एक संगीतकार या श्रोता के लिए अलग-अलग अनुभव ला सकता है। संपूर्ण भारतीय संगीत की संरचना राग के विचार के चारों ओर बनी है।

आइए हम सबसे पहले 'स्वर' के बारे में पढ़ेंगे-

I. स्वर

हर राग का एक रास्ता होता है जिस दो क्रमों में व्यवस्थित किया जाता है-

- आरोहणम (बढते क्रम में व्यवस्थित स्वर)

- अवरोहणम (घटते क्रम में व्यवस्थित स्वर)

सामान्य रूप से राग इन सात स्वरों का मिश्रण हैं-

- सा -शद्जम्
- री - रिषभम्
- गा - गंधारम्
- पा - पंजामम्
- धा - धैवतम्
- नी - निषादम्

रागों में 72 मेलाकार्थ राग शामिल हैं। लेकिन कई राग इन 72 मेलाकार्था राग से ही निकले हैं। वे राग जो कि किसी भी मेलाकार्थ राग से निकले हैं-जन्य राग कहलाते हैं। मूल राग को जनक राग कहा जाता है। मेलाकार्था राग जनक राग हैं।

एक मेलाकार्था राग वह है जिसमें सभी 7 स्वर होते है तथा आरोहण व अवरोहण अपने सही क्रम में होते हैं (उदाहरण – माया मालवय गावला, कल्याणी, शंकर भवनम् आदि)

एक जन्य राग के लिए आवश्यक है कि उसमें सभी 7 स्वर हों। साथ ही आरोहण व अवरोहण अपने सही क्रम में हों। उदाहरण – मोहन, हंसध्वनि, श्रीरागम् आदि)।

आप 7 स्वरों के बारे में पहले ही पढ़ चुके हैं। आप यह भी समझें कि इन्हीं 7 स्वरों का विस्तार होकर 12 स्वर बनते हैं जिन्हें 'द्वादश स्वर' कहते हैं। इन स्वरों के दो संस्करण (लघु एवं गुरु) है–री, गा, मा, धा और नी जिसके साथ केवल एक सा और पा (जो कि 2 प्रमुख स्वर हैं) होता है।

द्वादश स्वरों की सूची नीचे दी गई है। इनका प्रयोग 72 मेलाकार्था रागों को बनाने के लिए विभिन्न मिश्रणों में किया जाता है–

- सा – शद्जम्
- री – शुद्ध रिषभम्, चतुश्रुथी रिषभम्
- गा – साधारण गंधारम्; अन्तरा गंधारम्
- मा – शुद्ध मध्यमा, प्रथी मध्यमा
- पा – पंचमम्
- धा – शुद्ध धैवतम्, चतुश्रुथी धैवतम्
- नी – कैशिकी निषादम्, काकालि निषादम्

टिप्पणी – आप पियानो या हारमोनियम को देखकर इसे आसानी से समझ सकते हैं। यह एक सत्य है कि यही 12 स्वर मिलकर जगत के हर संगीत का निर्माण करते हैं।

II. राग

अब हम राग के बारे में पढ़ेंगे जो भारतीय संगीत का केन्द्र है। व्यवस्थित रूप से रखे गए तालों की श्रृंखला को राग कहते हैं जो कि संगीतकार या श्रोता को एक भिन्न अनुभव प्रदान करती है। भारतीय संगीत की पूरी संरचना रागों के विचार के इर्द-गिर्द बुनी है। यहां तक कि लोक संगीत भी कुछ रोगों द्वारा निर्धारित होते हैं। कुछ लोक संगीत मिश्रित प्रकार के रागों से बने हैं। उदाहरण के लिए किसी छंद का एक हिस्सा एक राग से बना है वहीं दूसरा हिस्सा किसी अन्य राग से। स्वरों की यह जुगलबंदी जो सुनने में मधुर लगती है, राग कहलाती है।

पाठगत प्रश्न 1.1

स्तम्भ क को ख से मिलाएं-

क		ख	
1.	आरोहणम्	i.	राग
2.	अवरोहणम्	ii.	प्राप्त राग
3.	व्यवस्थित रूप से स्वर	iii.	लघु एवं गुरु संस्करण
4.	जनक राग	iv.	मेलाकार्था राग
5.	जन्य राग	v.	बढ़ते क्रम में
6.	द्वादश स्वर	vi.	मूल राग
7.	मायामालव्य गावला	vii.	घटते क्रम में

1.2 रागों के प्रकार

रागों के दो प्रकार होते हैं विशेषकर कर्नाटक संगीत में। ये हैं–जनक राग और जन्य राग। रागों का जनक और जन्य राग में विभाजन विद्यारण्य में दिया गया है।

I. जनक राग

जनक राग को मेला राग, मेलाकार्था राग; रागांग राग और संपूर्ण राग जैसे नामों से भी जाना जाता है। जनक रागों की संख्या 72 है।

जनक राग की विशेषताएं

- एक जनक राग में आरोहण व अवरोहण के दोनों क्रमों में 7–7 स्वर होते हैं।

  उदाहरण – मायामालव्यगावला

- इसमें हर स्वर का केवल एक ही प्रकार होता है।
- आरोहण के क्रम में उपस्थित रूप अवरोहण में भी होते हैं।

II. जन्य राग

जनक राग से उत्पन्न राग जन्य राग कहलाते हैं।

जन्य राग की विशेषताएं–

- एक जन्य राग में सामान्यत: सभी 7 स्वर नहीं होते हैं बल्कि इसमें 5 या 6 स्वर आरोही अथवा अवरोही या फिर दोनों ही क्रम में होते हैं।
- यदि किसी जन्य राग में सात स्वर हैं भी तो वे अपने मूल स्वरों के क्रम में नहीं होते। उनके स्वरों का क्रम मूल क्रम से भिन्न होता है।

जन्य रागों को निम्न समूहों में वर्गीकृत किया जाता है-

- उपांग राग - इस राग में अपने जनक राग से लिए गए पांच या छ स्वर, आरोही या अवरोही क्रमों में होते हैं।

  उदाहरण - हंसध्वनि (धीरशंकरआभरण, 29वां मेलाकार्था से उत्पन्न)

- भाषांग राग - इस राग में जनक राग से लिए गए पांच या छः स्वर आरोह या अवरोही क्रम में होते हैं। साथ ही इसमें एक, दो या तीन स्वर ऐसे भी होते हैं जो जनक राग में उपलब्ध नहीं होते।

  उदाहरण - बिलाहरी (धीरशंकरआभरण 20वीं मेलाकार्था से उत्पन्न इसके अवरोहण में M3 हैं लेकिन N2 भी प्रयोग किया जाता है।)

- उपांग वक्र राग - यह भी उपांग राग जैसा ही होता है लेकिन इसमें स्वर क्रम में नहीं होते।

  उदाहरण - वसंत (सूर्यकान्त, 17वां मेलाकार्था से उत्पन्न)

- भाषांग वक्र राग - यह भी भाषांग राग जैसा ही है लेकिन इसमें स्वर क्रम में नहीं होते।

  उदाहरण - आनंद भैरवी (नट भैरवी, 20वें मेलाकार्था से उत्पन्न। इसमें आरोहण व अवरोहण का क्रम इस प्रकार होता है- (SG2 R2 G2 M1 P D2 PN3S/SN2 D2P M1 G3 N1 P D1P M1 G2 R2S) ध्यान दीजिए कि इसमें 3 स्वर - G3, D1 और N3 ऐसे हैं जो जनक राग में उपलब्ध नहीं हैं।)

सभी राग निम्नलिखित घटकों से मिलकर बने हैं-

- **आरोहण** - बढ़ते क्रम के रागों के लिए प्रयोग किये जाने वाले स्वर।

- **अवरोहण** – घटते क्रम के रागों के गायन में प्रयुक्त स्वर।
- **वादी** – यह रागों का सबसे महत्वपूर्ण स्वर है। (पश्चिमी संगीत में इसे 'टोनी' कहते हैं।)
- **सम्वादी** – दूसरा सबसे महत्वपूर्ण प्रमुख स्वर।
- **कोमल स्वर** – नाम से स्पष्ट है कि इनकी प्रकृति कोमल होती है। पश्चिमी संगीत में जिन्हें–फ्लैटेन्ट कहा जाता है वे इसमें शामिल हैं।
- **तीव्र स्वर** – यह रागों में सम्मिलित तीक्ष्ण स्वर हैं।
- **वर्जित स्वर** – ये वह स्वर हैं जिनका प्रयोग किसी विशेष राग को बनाने या उसके गायन–वादन में मना होता है।
- **साम्य** – दिन का वह समय जब वो राग विशेष गाया या सुना जाना चाहिए।
- **ताल** – एक विशेष आवाज (हाथ की) जो किसी राग विशेष से जुड़ी है।

पाठगत प्रश्न 1.2

रिक्त स्थान भरिए–

1. ..... में सामान्यत: सभी सात स्वर नहीं होते।
2. ..... स्वरों का एक समूह है जिसका प्रयोग बढ़ते क्रम के रागों के गायन–वादन में होता है।
3. राग में सम्मिलित कोई भी तीक्ष्ण स्वर ..... कहलाता है।
4. किसी विशेष राग से जुड़ी कोई विशेष आवाज ..... कहलाती है।
5. राग में सबसे महत्वपूर्ण स्वर ..... है।

1.3 मायामालव गावला और धीर शंकरआभरण का अभ्यास

इन रागों के प्रयोगिक ज्ञान को सीखने के लिए आपको किसी ऐसे गुरू या शिक्षक के पास जाना होगा जो इनमें सिद्धहस्त हो और इनका रोज अभ्यास करता हो।

लेकिन आइए हम निम्नलिखित रागों के बारे में सीखें-

- मायामालव गावला और
- धीर शंकरआभरण

राग-मायामालव गावला (मेलाकार्था-15वां राग)

- आरोहणम्- S R1 G3 M1 P D1 N3S
- अवरोहणम् - S N3 D1 P M1 G3 R1 S

राग-धीर शंकरआभरण

- आरोहणम् - S R2 G3 M1 P D2 N3 ?[a]
- अवरोहणम् - ? N3 D2 P M1 G3 R2 S[b]

आपने क्या सीखा

- राग क्रमबद्ध रूप में स्वरों की एक व्यवस्था है जो संगीतकार या श्रोता को एक अलग अनुभव देती है।
- हर राग का एक मार्ग होता है जो कि आरोही (बढ़ते क्रम) और अवरोही (घटते क्रम) क्रम में व्यवस्थित होता है।
- रागों के दो प्रकार होते हैं विशेषकर-कर्नाटक संगीत में। यह हैं जनक राग और जन्य राग। जनक और जन्य रागों के रूप में यह वर्गीकरण विद्यारण्य द्वारा दिया गया है।

- जनक राग को निम्न के रूप में भी जाना जाता है–
  - मेला राग
  - मेलाकार्था राग
  - रामांग राग
  - संपूर्ण राग
- जनक रागों की कुल संख्या 72 है।
- रागों के सभी घटक निम्नलिखित है–
  - आरोहण
  - अवरोहण
  - वादी
  - सम्वादी
  - कोमल स्वर
  - तीव्र स्वर
  - वर्जित स्वर
  - साम्य
  - ताल

पाठांत प्रश्न

1. जनक राग का एक अन्य नाम क्या है?
2. जनक राग की विशेषताओं की सूची बनाइए।
3. जन्य राग की प्रमुख विशेषताएं कौन सी हैं?
4. रागों को सीखते समय कौन सी सावधानियां रखनी चाहिए।

उत्तरमाला

1.1

1. -(v)
2. -(vii)
3. -(i)
4. (vi)
5. (ii)
6. (iii)
7. (iv)

1.2

1. जन्य राग
2. आरोहण
3. तीव्र स्वर
4. ताल
5. वादी